International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 11, November 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :, editoraarf@gmail.com

शुक्र

शुक्र की दण्डनीति (राजनीति)

डॉ0 मो0 इमरान खाँ
सहायक प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान
मुमताज पी0जी0 कालेज, लखनऊ

शुक्रनीति में 2200 श्लोक हैं, इसके आरम्भ में कहा गया है कि यह भार्गव (शुक्र) का अपने शिष्यों को दिया गया उपदेश है। शुक्र खुद इसके बारे में कहते हैं कि – ''इस नीतिसार का जो राजा दिन–रात चिन्तन करगे ा वह राजभार उठाने में समर्थ होगा।'' प्रो0 अलतेकर अपनी किताब प्राचीन भारतीय शासन पद्धति में लिखते है कि, ''प्राचीन भारतीय राजतंत्र के अध्ययन की दृष्टि में शुक्रनीति बड़ी उपयोगी है इसमें शासन व्यवस्था का सुन्दर विवरण है, वैसा अर्थशास्त्र के बाद किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं है।'' राजेन्द्र लाल मित्र तथा डॉ0 घोषाल ने इसकी रचना 12वीं और 16वीं शदी के मध्य माना है।

शुक्र ने राजनीति (नीतिशास्त्र) की धारणा शासन कला के रूप में की है। जिसका निश्चित उद्देश्य सामान्य सुख को प्रोत्साहन देना है। यूनीनी चिन्तकों ने भी राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के मिलन पर जोर दिया था और बाद में बेन्थम के सुखवाद के सिद्धान्त में मिल न` संशोधन कर सामान्य सुख की उपयोगिता को बताया। कामन्दक की तरह शुक्र ने चार विधाए मानी हैं, आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दण्डनीति जो मनुष्यों के योगक्षेम के लिए जरूरी है। दण्डनीति को प्राथमिकता मिली है, इसी में नीति व अनीति स्थित है। संयम अथवा दमन का नाम ही दण्ड है, राजा दण्ड में स्थित है और उसकी नीति दण्डनीति है। इसे इसी वजह से नीति कहत` है, क्योंकि यह सम्यक रीति से मार्ग पर चलाने में समर्थ है।

शुक्र के अनुसार राजा को चार विधाओं का हमेशा अभ्यास करना चाहिए। आन्वीक्षिकी मं` न्यायशास्त्र और वदेान्त है, त्रयी में धर्म, अधर्म कामना और मोक्ष है, अर्थ और अनर्थ वार्ता में है और न्याय व अन्याय दण्डनीति में आते हैं। दुष्टों के दमन को दण्ड कहते हैं। इसी वजह से राजा दण्डरूप है और राजा की नीति दण्डनीति है शुक्र ने वर्ण और आश्रम व्यवस्था को मान्यता दी है किन्तु आधार जन्मना न मानकर गुण और कर्म बताया है। शुक्राचार्य का मत है कि राजा अपन` पूर्वजन्म के तप से ही इस पृथ्वी का पालनकर्ता है। राजा इस संसार की वृद्धि का कारण है तथा वह नेत्र को उसी तरह आनन्दित करता है जिस तरह चन्द्रमा समुद्र को। यदि उत्तम नीतियों से युक्त राजा न हो तो प्रजा उसी प्रकार नष्ट हो जाती है जैसे मल्लाह के बिना समुद्र में नाव। इन्द्र, पवन, यम, सूर्य, अग्नि,

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वरूण, चन्द्र तथा कुबेर के स्वाभाविक अंशो से और अपने तप के प्रताप से राजा राज्य का स्वामी होता है पिता के सामान प्रजा का ख्याल रखता है। शुक्रनीति में मन्त्रियों की नियुक्ति पर बल दिया गया है, अन्यथा राजा के निरंकुश होने की उम्मीद है। शुक्र के अनुसार अमात्य, पुरों, ग्रामों और वनों की संख्या का उल्लेख राजा से करे, किसने कितनी भूमि जोती, कितना भाग उससे लिया, कितनो शेष रहा और बिना जोती भूमि कितनी है। वर्ष में जितना भाग (कर), मुलूक (महसूल) व दण्ड से एकत्र हुआ हो तथा वन से उत्पन्न और बिना जोती हुयी भूमि के अन्न का हिसाब भी रखे। खानों की देखरेख भी आमात्य (मंत्री) करे। खानों से कितना धन मिला, खान में कितना धन और चोरी से कितन` धन का नुकसान हुआ। (2.102–106)

शुक्रनीति के अनुसार आठ मंत्री होन` चाहिए– सुमन्त्र, पण्डित, मन्त्री, प्रधान, सचिव, पाडविवाक और प्रतिनिधि जिन्हे राजा की आठ प्रकृतियाँ बताया गया है। पुरोहित को इन आठ से ऊपर बताया है। पुरोहित के कोप डर से राजा को भी धर्मनीति में परायण होना चाहिए। शुक्र के अनुसार राजा एक तरह से प्रजा का सेवक है और प्रजा से वसूल किया गया कर उसका वेतन है। राजा को प्राप्त सत्ता एक तरह की धरोहर है जिसका प्रायोग प्रजा के हित में किया जाना चाहिए।

न्याय में राजा का मत सर्वोपरि माना जाता था, क्योंकि उत्तम, मध्यम और अद्यम लोग जिस विवाद पर विचार नहीं कर पाते उन पर राजा की बुद्धि विचरती है (4.555)। लेकिन निर्णय, राजा, अधिकारी, सभासद, धर्मशास्त्र, गणक, लेख ाक, स्वर्ण, अग्नि, जल और राजपुरूष इन दस कार्य सिद्धि के अंगो की उपस्थिति में किया जाता था (4.559–60)। शुक्राचार्य ने राजा के समीप के पचास छलों के अलावा दस अपराधों का भी उल्लेख किया है, राजाज्ञा का उल्लघं ान, स्त्री–हत्या, वर्णसंकर, पर–स्त्रीगमन, चोरी, पति के बिना गर्भधारण, कठोर वाणी, निन्दा, अनुचित कठोर दण्ड और गर्भ–पालन (4.592–603)। जिस मनुष्य पर अपराध का सन्देह हो उसे राजकीय पुरूष या आदेश भेजकर बुलवाना चाहिए। किन्तु असमर्थ और सज्जन हेतु वाहन भेजना चाहिए और सन्यासी को बड़े कार्य के लिए ही इस तरह बुलाए जिससे वह कुपित न हो। राजा को चाहिए कि वह साक्षी के कथन के समय को न बताए और वादी–प्रतिवादी के समक्ष प्रत्यक्ष साक्षी का कथन अंगीकार करे (4. 709–10)। साक्षी को बुलाकर गगं ादि की सौगन्ध दे तथा पुराण के सत्य वचन धर्म का माहात्म्य बताकर मुदकमें के सम्बन्ध में सवाल पूछे (4.716)।

शुक्रनीति में कहा गया हैं कि, 'सैन्याद्विना नैवराज्यन धननः पराक्रमः' अर्थात् सेना के निबा न धन है, न राजा है और न पराक्रम। अस्त्रों–शस्त्रों से युक्त मनुष्य को सेना कहते हैं। सेना का बल दो प्रकार का होता है, पहला स्वय ं की सेना और दूसरा मित्र की सेना का बल। पाँच–छः सैनिक के अधिपति को पत्तिपाल, तीस सैनिक के अधिपति को गौत्यिक, शत के अपधिपति को शतनीक और इससे बड़े को अनुशतिक कहते थे। इसके अलावा हजार तथा दस हजार सैनिकों के भी अधिपति होते थे। शुक्र कहते हैं कि नीति का जानन ` वाला राजा सारे उपायों स`ऐसा करे कि मित्र, शत्रु या उदासीन कोई भी अपने से अधिक न होने पाये। जो शत्रु अपने से कुछ अधिक हो उसके साथ साम और भेद का बर्ताव किया जा सकता है। भेद और दण्ड का प्रयोग समान शत्र ु के साथ उचित माना गया है। जो शत्रु निर्बल हो उसे दण्ड देकर ठीक कर लेना चाहिए।

शुक्र के अनुसार सन्धि, विग्रह, यान, आसन, आश्रय और द्वैधीभाव मन्त्र के छः गुण हैं। बलवान राजा बलवान शत्रुओं से जिन क्रियाओं से मित्र बन जाए वह सन्धि कहलाती है।

जिस कार्य द्वारा दबाया शत्रु अपने अधीन हो जाए उसे विग्रह कहते हैं। शत्रु के नाश के निमित्त अपनी विजय के लिए उस पर जो चढ़ाई की जाती है, उसे यान कहते हैं। जिस स्थान पर बैठने से अपनी रक्षा और शत्रु का नाश सम्भव हो उस स्थान पर बैठने को आसन कहते हैं। जिन मित्रों से सुरक्षित होकर दुर्बल राजा भी बलवान हो जाए उसे आश्रय और अपनी सेना को शत्रु और मित्र दोनों स्थानों पर नियुक्त करना द्वैधीभाव कहलाता है। बुद्धिमान राजा बलवान शत्रु से सन्धि करे पर किसी पर विश्वास नहीं करे। जिस शत्रु राजा की सेना और मित्र कमजोर हो चुके हों, जो किसी दुर्ग (किले) में बन्द करके बैठे हों, जो दो शत्रुओं से घिरा हुआ हो, जिसके मन्त्री और सेना में फूट पड़ी हों, ऐसे शत्रु को घेरकर वश में करना चाहिए।

डा0 घोषाल न` कहा है कि शुक्र राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति क`लिए नैतिकता के त्याग को उचित ठहराता है। सामान्यतः शुक्र राजनीति के ऊपर नैतिकता की सर्वोपरिता को मानता है, उसने व्यवहार मं` लम्बे समय से चली आ रही अर्थशास्त्र परम्परा को स्थायी बनाने में सहयोग दिया है जिसके अनुसार राजनीति नीतिशास्त्र से न्यूनाधिक पूर्णतः अलग है। सन्दर्भ ग्रन्थ :

1- अलतेकर – प्राचीन भारतीय शासन पद्धति

2- ठमदप च्तेंक . जीमवतल व िळवअमतदउमदज ।दबपमदज प्दकपं

3- शुक्रनीतिसार

4- न्ण छण् ळीवींस . । भ्पेजवतल व िप्दकपं च्वसपजपबंस प्कमें

5- डॉ0बी0एल0 फाड़िया – प्रमुख राजनीतिक चिन्तक